❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

यज्ञ संबंधित जानकारी प्राप्त करने के लिए
7428894020 मिस कॉल करें
thearyasamaj .org

वर्ष 47, अंक 1 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 20 नवम्बर, 2023 से रविवार 26 नवम्बर, 2023
विक्रमी सम्वत् 2080 सृष्टि सम्वत् 1960853124
दयानन्दाब्द : 200 पृष्ठ 8
वार्षिक शुल्क : 250 रुपये दूरभाष: 23360150
ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें -www.thearyasamaj.org/aryasandesh

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के तत्त्वावधान में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का 140वां निर्वाण दिवस सम्पन्न

200 की आकृति में हुए सामूहिक यज्ञ से जगमगाया रामलीला मैदान

महर्षि दयानन्द जी के जीवन पर आधारित संस्कृतिक प्रस्तुति को देखकर भावविह्वल हुए आर्यजन

विश्व के महापुरुषों में अग्रणी है महषि की स्थान
– डॉ. स्वामी देवव्रत, सार्व.आर्य वीर दल

सोते हुए भारत राष्ट्र को जगाया था महषि दयानन्द सरस्वती ने
– दीपक केड़िया, इंस्पेक्टर जनरल, एन.एस.जी.

आधुनिक भारत के निर्माण में महषि का योगदान अविस्मरणीय
– धर्मपाल आर्य, प्रधान, दिल्ली आर्य प्र. सभा

19वीं सदी के महामानव, आर्य समाज के संस्थापक व महान लोकोपकारी महर्षि दयानन्द सरस्वती जी एक ऐसे अद्वितीय और अनुपम महापुरुष थे जिनके ज्ञान के आलोक से सम्पूर्ण विश्व में एक नई क्रांति का जन्म हुआ। महर्षि ने संपूर्ण मानवजाति का उपकार करते हुए स्वयं का स्वयं से परिचय कराया, सिर उठाकर जीना सिखाया, देश की आज़ादी के लिए क्रांति की प्रेरणा देकर प्रथम ज्योति प्रज्वलित की, भक्त और भगवान के बीच जो ढोंग, पाखंड और आडंबर अवरोध बनकर खड़े थे उन्हें वैदिक ज्ञान की ज्योति से दूर भगाया। मानव समाज के दु:ख, पीड़ा और संतापों से महर्षि का कोमल हृदय द्रवित हो उठा और उन्होंने मानवमात्र के लिए सुख, समृद्धि और कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया। किन्तु महर्षि दयानंद सरस्वती जी को जब उनके रसोइए ने ही कालकूट विष दिया तब भी महान दयालु महर्षि अपने कातिल को अभय दान देकर 30 अक्टूबर 1883 को दीपावली के दिन ही देह त्यागकर निर्वाण को प्राप्त हो गए। तब से लेकर अब तक लगातार आर्य समाज उनका निर्वाण दिवस मनाता आ रहा है। आज जब सम्पूर्ण विश्व में महर्षि के 200 वें जन्मदिन और आर्य समाज के

– शेष चित्रमय झांकी एवं समाचार पृष्ठ 5-6 पर

कनाड़ा में भी आयोजित होंगे महर्षि दयानन्द जी की 200वीं जयन्ती के विभिन्न आयोजन – यशपाल कपूर (कनाड़ा)

आओ चलें टंकारा – सम्पूर्ण विश्व में गूंजेगा दयानन्द का जयकारा – आओ चलें टंकारा

10-11-12 फरवरी, 2024 तद्नुसार माघ शुक्ल 1-2-3 विक्रमी 2080 (शनि-रवि-सोम)

महर्षि दयानन्द का 200वां जन्मोत्सव – स्मरणोत्सव समारोह

स्थान : ऋषि जन्मभूमि टंकारा, जिला-राजकोट (गुजरात)

विशेष निवेदन : समस्त आर्य प्रतिनिधि सभाओं, आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थानों, गुरुकुलों, विद्यालयों, डी.ए.वी. संस्थाओं तथा व्यापारिक एवं औद्योगिक संस्थानों से अनुरोध है कि **उपरोक्त तिथियों में अपना कोई भी आयोजन न रखें** और अपने **समस्त साथियों, अधिकारियों, सदस्यों एवं कार्यकर्ताओं के साथ सपरिवार पहुंचने की तैयारी अभी से आरम्भ कर लें** तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती के इस ऐतिहासिक स्मरणोत्सव समारोह को सफल बनाने में अपनी अहम् भूमिका निभाएं। यह ऐतिहासिक अवसर पर है किसी महापुरुष की जन्म की द्विशताब्दी में सम्मिलित होने का अवसर जीवन में दोबारा प्राप्त नहीं होता।

निवेदक : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा – ज्ञान ज्योति महोत्सव आयोजन समिति– श्री महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा – गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा

महर्षि दयानन्द की 200वीं जयन्ती पर अमेरिका में आर्य महासम्मेलन

200 YEARS OF MAHARSHI DAYANAND BIRTH
150 YEARS OF ARYA SAMAJ FOUNDATION
INTERNATIONAL ARYA MAHASAMMELAN
(Largest Global Summit of Arya Samaj Ever, outside India)
HOSTED BY ARYA SAMAJS OF TRI-STATE OF NEW YORK, NEW JERSEY AND CONNECTICUT

July 18-21, 2024 | New York

महासम्मेलन में भाग लेने के इच्छुक महानुभाव तत्काल रजिस्ट्रेशन कराएं
https://tinyurl.com/iams2024ny

STAY TUNED FOR MORE INFORMATION : www.aryasamaj.com

देववाणी-संस्कृत

अद्भुत मित्र

वेद-स्वाध्याय

देवो देवानामसि मित्रो अद्भुतो वसुर्वसूनामसि चारुरध्वरे।
शर्मन्त्स्याम वत सप्रथस्तमेऽग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव।। -ऋ. 1/94/13
ऋषिः **कुत्स आङ्गिरसः**।। देवता - **अग्निः**।। छन्दः **विराडजगती**।।

शब्दार्थ-अग्ने = हे परमेश्वर! **देवानां देवः असि** = तू देवों का देव है **अद्भुतः मित्रः** = तू अद्भुत मित्र है! **वसूनां वसुः असि**= तू सब वसुओं का वसु, धनों का धन है।! **अध्वरे चारुः**= यज्ञ में ते शोभायमान है, अतः हम चाहते हैं कि **वयम**= हम **तव** = तेरी **सप्रथस्तमे शर्मन्**= विस्तीर्णतम शरण में **स्याम**= होवें और **तव सख्ये**= तेरे सख्य में **मा रिषाम**= हम नष्ट न होवें।

विनय-हे प्रभो! हम चाहते हैं कि हम तेरी विस्तीर्णतम शरण में रहने लगें। तेरी शरण इतनी फैली हुई है कि उसमें आकर मनुष्य किसी भी देश में व किसी भी काल में दु:ख नहीं पा सकता। संसार की और किसी भी वस्तु का आश्रय ऐसा नहीं है । सब सुख, सब आश्रय और सब शरण इसके सामने अत्यन्त तुच्छ है, क्योंकि संसार के सब देवों के भी देव तुम हो। सब देवों में देवत्व तुम्हारे द्वारा ही आया है। तुम्हारे आश्रय के बिना इन अग्नि आदि महान् दीखने वाले देवों में कुछ नहीं है। इन सब बसाने वालों के बसाने वाले तुम हो। सब धनों के धन तुम हो। तुम्हें पाकर और सब धन बेकार हो जाते हैं। सब पुण्य यज्ञों के अन्दर तुम ही शोभायमान होते हो। यज्ञों का सौन्दर्य तुम हो। तुम्हारे बिना कोई यज्ञ, यज्ञ नहीं रह सकता और तुम अद्भुत मित्र हो। अहो! ऐसा मित्र और कौन हो सकता है? यदि सर्वशक्तिमान और तीनों कालों का जानने वाला मित्र किसी को मिल सके तो उसे और क्या चाहिए! इसीलिए अब हम तेरे सख्य में (मैत्री में) आना चाहते हैं। हमने तुझे देवों का देव, वसुओं का वसु समझ लिया है, अतः हमें अब किसी अन्य देव व वसु की प्राप्ति की चाहना नहीं रही है, हमने तुझे ''सब यज्ञों के सौन्दर्य'' रूप में देख लिया है, अतः हमें अब किन्हीं कर्मकाण्ड-मय यज्ञों के करने में आर्कषण नहीं रहा है, अब तो तेरे निरन्तर ध्यान का यज्ञ ही सर्वश्रेष्ठ लगता है। हमने तुझे अद्भुत मित्र देखा है- अहो, ऐसा अद्भुत! ऐसा विलक्षण!! तुझ सर्वज्ञ, सर्वसमर्थ मित्र की अद्भुतता दूसरे न जानने वाले को कैसे समझाई जाए? अहो, तुम कैसी विलक्षणता से हम सबके साथ आठों प्रहर, हर घड़ी, हर पल परम मित्रता निभा रहे हो! तुम जैसे अद्भुत मित्र को देखकर अब हमें और किसी की मैत्री की आवश्यकता नहीं है। अरे, वे अनजान लोग हैं जो संसार में और किसी की मैत्री पाने के लिए टक्करें मारते फिरते हैं। तेरी विस्तृत शरण में तो और सब शरण समा जाती हैं, अतः हे स्वामिन्! हमें तो अपनी मैत्री प्रदान कर, तब हमें कोई भय न रह सकेगा! हे प्रभो! तू हमें अपनी अनन्त, अपार शरण में जगह दे दे, तब हमें किसी विनाश का भय न रह सकेगा। **-: साभार :- वैदिक विनय**

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

दिल्ली और आस-पास के राज्यो में निरन्तर बढ़ते वायु प्रदूषण का विशलेषण

दिल्ली के दमघोटू वातावरण में कैसे स्वस्थ रहें?

प्रतिस्पर्धा के इस युग में मनुष्य को कई तरह के प्रदूषणों का सामना करना पड़ रहा है। इनमें वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, वैचारिक प्रदूषण सबसे बड़े खतरे के रूप में सामने हैं। इसके साथ-साथ साक-सब्जियों में कीटनाशक-कैमिकलों के छिड़काव आदि कई तरह की चुनौतियां हमारे स्वास्थ्य के लिए बड़ी भारी चिंता का विषय बनी हुई हैं। इस पर भी अगर भारत की राजधानी दिल्ली की बात करें तो जहरीली हवा में श्वास लेना दूभर हो गया है। राजनीतिक पार्टियों और दिल्ली सरकार की बात करें तो पहले पराली जलाने से धुआं हरियाणा और पंजाब से आता था लेकिन इस बार केवल इसके लिए हरियाणा ही दोषी है। जहां दिल्ली वासियों की बात करें तो जहां विषैले वातावरण से परेशान हैं वहीं अपनी गलत आदतों के कारण भी दुखी हैं। दीपावली से पहले बारिस होने से लगा था कि चलो प्रदूषण से थोडी राहत जरूर मिलेगी। लेकिन दीवाली की रात को दिल्ली वालों ने ऐसे बम पठाखे जलाए कि वायु प्रदूषण की स्थिति बद से बदतर हो गई। जिसका परिणाम हम अगली बारिश तक भुगतते रहेंगे। असल में वायु प्रदूषण से बचाव के लिए जहां सरकारों को ठोस कदम उठाने की जरूरत है वहीं दिल्ली वसियों को भी अपनी आदतों में परिवर्तन करने की आवश्यकता है। आजकल लगातार वृक्षों को काटा जा रहा है, हरियाली समाप्त होती जा रही है। प्रकृति का संतुलन बिगड़ रहा है। जल दूषित हो रहा है तथा जल का स्तर भी लगातार घटता जा रहा है, चारों तरफ बीमारियां फैल रही हैं, यह केवल एक चिंता ही नहीं चिंतन का विषय भी है कि इस धरती पर बढ़ते विषैले प्रदूषण के बीच हम किस तरह से स्वस्थ रहें? तथा आने वाली पीढ़ियां भी कैसे स्वस्थ रहेंगी? आज के युग में हमारा लाइफस्टाइल भी इतना फास्ट होता जा रहा है कि हम इस महत्वपूर्ण विषय पर विचार करने के लिए तैयार ही नहीं हैं। आजकल जो कालोनियां बसाई जा रही हैं उनमें पार्क और उद्यान भी कम बनाए जा रहे हैं। चारों तरफ दिल्ली में बढ़ता हुआ धूल-धुंआ प्राणवायु को विषैला करता जा रहा है।

सारे बुद्धिजीवी विशेषकर वैज्ञानिक कब से चिंता जता रहे हैं कि इस गति से बढ़ते प्रदूषण को रोका नहीं गया तो पृथ्वी पर मनुष्य का जीना दूभर हो जाएगा। अग्निहोत्र युनिवर्सिटी अमेरिका द्वारा प्रकाशित "होलैस्कि हिलिंग" पुस्तक में तो स्पष्ट कह दिया गया कि प्रदूषण से उत्पन्न महाविनाश को अगर समय रहते नहीं रोका गया, इसके लिए सामूहिक तौर पर यदि इसकी रोकथाम का कोई उपाय नहीं किया गया तो इस युग में मानव जीवित नहीं रह पाएगा। "शुक्र ग्रह पर पहले समुद्र थे किंतु वहां तापमान की वृद्धि के कारण सब जलीय तत्त्व भाप बनकर उड़ गए। वैज्ञानिकों ने चेतावनी दी है कि वर्तमान में जैसे खतरनाक रसायनों को प्रयोग हो रहा है तथा पार्थिव पदार्थ जलाए जा रहे हैं, ऐसे ही निरंतर जलाए जाते रहे तो पृथ्वी भी एक दिन शुक्र ग्रह की तरह बन जाएगी। पृथ्वी का तापमान भी बढ़ता जा रहा है जिसका पर्यावरण का दूषित होना है।

क्या आप जानते हैं? सामान्य रूप से वायु में 21% ऑक्सीजन, 78% नाइट्रोजन, 0.03% कार्बन डाई-ऑक्साइड तथा 1% अन्य गैसें होती है। वायु में अन्य जहरीली गैसों के मिलने के कारण इसकी संरचना में परिवर्तन होने से वायु प्रदूषण होता है। किसी भी स्वचालित वाहन में एक गैलन पैट्रोल के जलने से 3 पौण्ड नाइट्रोजन ऑक्साइड गैस निकलती है, जो 5 से 20 लाख घनफीट हवा को प्रदूषित कर देती है। एक मोटर वाहन 970 किलोमीटर की यात्रा में उतना ऑक्सीजन फूंक डालता है जितना कि एक व्यक्ति को एक वर्ज के लिए आवश्यक होता है। पेट्रोल जलने से जो सफेद धुंआ निकलता है उसमें सीसे की मात्रा अधिक होती है, जो शरीर की कोशिकाओं में जाकर हमारी जीन्स को विकृत कर देता है, इससे कैंसर जैसी कई जानलेवा बीमारियों की संभावनाएं बढ़ जाती हैं।

आजकल लगातार वृक्षों को काटा जा रहा है, हरियाली समाप्त होती जा रही है। प्रकृति का संतुलन बिगड़ रहा है। जल दूषित हो रहा है तथा जल का स्तर भी लगातार घटता जा रहा है, चारों तरफ बीमारियां फैल रही हैं, यह केवल एक चिंता ही नहीं चिंतन का विषय भी है कि इस धरती पर बढ़ते विषैले प्रदूषण के बीच हम किस तरह से स्वस्थ रहें? तथा आने वाली पीढ़ियां भी कैसे स्वस्थ रहेंगी? आज के युग में हमारा लाइफस्टाइल भी इतना फास्ट होता जा रहा है कि हम इस महत्वपूर्ण विषय पर विचार करने के लिए तैयार ही नहीं है। आजकल तो कालोनियां बसाई जा रही हैं उनमें पार्क और उद्यान भी कम बनाए जा रहे हैं। चारों तरफ दिल्ली में बढ़ता हुआ धूल-धुंआ प्राणवायु को विषैला करता जा रहा है।

महानगरों में रहने वाले लोग जाने-अनजाने में प्रतिदिन 20 सिगरेटों के धुंए जितना विषैला तत्त्व अपने फेफड़ों में खींच लेते हैं। फैक्ट्री तथा कारखानो से निकलने वाला धुएं का गुबार आसमान में छाया रहता है। जिसकी समय-समय पर समाचारों में खबर आती है कि सुबह के समय पार्क में सैर करने ना जाएं।

एक व्यक्ति एक वर्ष में 12 टन कार्बनडाय ऑक्साईड बाहर फेंकता है, मनुज्य के शरीर में नौ द्वार-छेद होते हैं। इन सभी छिद्रों से मनुष्य दुर्गन्ध छोड़कर पर्यावरण को दूषित करता है। जब पर्यावरण को दूषित मनुष्य स्वयं करता है तो इसे स्वच्छ करने की जिम्मेवारी किसकी है? हम सब मनुष्यों को चाहिए कि खाली बोतल, प्लास्टिक के थैले, कूड़ा-कचरा, यहां-तहां फेंकने से बचना चाहिए।

- शेष पृष्ठ 7 पर

साप्ताहिक स्वाध्याय

खाण्डव वन

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित जीवनी महर्षि दयानन्द से क्रमशः साभार

बहुत पहले ऐतिहासिक काल से पहले, वेद और प्रधानतया वैदिक साहित्य केवल भारत की सीमाओं में परिमित हो चुका था। जो लोग ईरान में बसे या ग्रीस में पहुंचे वे भारतीय आर्यों के बन्धु थे, परन्तु यह विषय यथार्थ इतिहास का होते हुए भी कल्पनात्मक है। .... भारत के धार्मिक परिवर्तनों पर ये चारों आक्रमण बड़ा गहरा असर उत्पन्न करते रहे हैं, परन्तु इसका यह अभिप्राय न समझना चाहिये कि केवल बाहर के प्रभाव ही भारत के धार्मिक विचारों को हिलाते रहे हैं। समय-समय पर आवश्यकता होने पर आन्तरिक प्रतिक्रिया भी उत्पन्न होती रही है। जाति की जरूरत के अनुसार बदले हुए वायुमण्डल के साथ अनुकूलता पैदा करने के लिए या बिगड़े हुए ढांचे को सुधारने के लिए ऐसे सुधारक पैदा होते रहे हैं जो बिगड़ी को बनाने का यत्न करते रहे हैं। यदि भारतवर्ष के धार्मिक परिवर्तनों का इतिहास देखा जाए, तो हमें ज्ञात होगा कि उसमें आंतरिक प्रतिक्रिया और बाह्य आक्रमण-दोनों का ही प्रभाव है।

प्रकाशक : आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट,
सह प्रकाशक - दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.)
पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑनलाइन www.vedicprakashan.com पर अथवा 9540040339 पर आर्डर करें

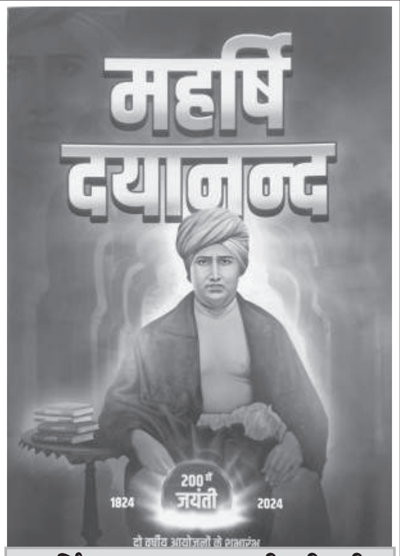

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती पर प्रकाशित

ये दोनों बड़ी-बड़ी प्रतिक्रियाएं बाहर के प्रभाव से शून्य थीं। ये केवल अन्दर से उत्पन्न हुई थीं। यही कारण था कि ये सब एक ही शरीर के अंगों के समान परस्पर पूर्णता उत्पन्न करती थीं। ब्राह्मण और उपनिषद् आदि ग्रन्थ एक-दूसरे के हाथ में हाथ डालकर चलते रहे और एक ही पुरुष के आंख-कान के सदृश जीवित रहे। उपनिषदों का ऊंचा ब्रह्मज्ञान धीरे-धीरे क्रियाहीन ईश्वर-विश्वास के रूप में परिणत हो गया और ब्राह्मण-ग्रन्थों का कर्मकांड हिंसापूर्ण यज्ञ-प्रक्रिया की पद्धतियों में तब्दील हो गया। उस समय महात्मा बुद्ध ने क्रियात्मक धर्म का उपदेश देते हुए प्रेम और त्याग का संदेश सुनाया और एक सार्वभौम धर्म की नींव डाली।

बुद्ध के पीछे भारत पर सिकन्दर का आक्रमण हुआ। सिकन्दर का भारत में निवास बहुत थोड़े समय तक हुआ। उसका कोई गहरा प्रभाव दिखाई नहीं देता, तो भी हम दो बड़ी घटनाओं में उसके दृष्टांत की छाया देख सकते हैं। चन्द्रगुप्त मौर्य का साम्राज्य-यत्न सिकन्दर के उदाहरण से प्रभावित हुआ था और अशोक का धर्म साम्राज्य स्थापित करने का उद्योग भी सिकन्दर की सार्वभौम विजय के यत्न से प्रभावित हुआ हो तो कोई आश्चर्य नहीं। जैसे चन्द्रगुप्त का भारतीय साम्राज्य यूनान के अभीष्ट भारतीय साम्राज्य का उत्तर था, इसी प्रकार अशोक का धार्मिक आक्रमण यूनान की सभ्यता और संस्कृति के आक्रमण का प्रत्युत्तर था।

यही दशा हम गुप्त काल में देखते हैं। गुप्त सम्राटों का राजनैतिक साम्राज्य हूणों और सीथियनों के आक्रमणों से देश की रक्षार्थ एक प्रकार का दुर्ग था। राजनैतिक संगठन प्रायः बाहर से आनेवाली चोटों के कारण ही उत्पन्न हुआ करते हैं। गुप्त साम्राज्य उत्तर की जातियों की विजयकामना का फल था। साथ ही पुराने ब्राह्मण-धर्म का पौराणिक धर्म के रूप में संगठन जहां एक ओर आर्य-जाति की आन्तरिक स्थिति को सूचित करनेवाला बाह्य चिह्न था, वहीं साथ ही वह उत्तर दिशा के असभ्य आक्रमणकारियों के प्रभाव से भी हीन नहीं था। पौराणिक धर्म के संगठन में अन्दर की हलचल और बाहर की क्रिया दोनों ही स्पष्ट दिखाई देती हैं।

बहुत काल पीछे लगभग 11वीं शताब्दी के आरम्भ में मुसलमानों का भारत पर दूसरा आक्रमण प्रारम्भ होता है। इस्लाम का भारत पर तब राजनैतिक आक्रमण नहीं था। वह आक्रमण प्रधानतया धर्मिक था राजनैतिक विजय उसका केवल आनुषंगिक फल था। इस्लाम की तलवार भारत को मुसलमान बनाने आई थी। आकर देखा तो शिकार को निर्बल पाया। छिन्न-भिन्न भारत थोड़े ही यत्न में राजनैतिक पराधीनता में आ गया। तलवार का असली उद्देश्य भारत को धार्मिक दृष्टि से विजित करना था। यह निश्चय से कहा जा सकता है कि इस उद्देश्य में इस्लाम को काफी सफलता प्राप्त नहीं हुई। कारण यह है कि जहां भारत कई सदियों तक पराधीन रहकर भी अपनी सम्मिलित राजनैतिक शक्ति को मुसलमानों की राजनैतिक शक्ति के विरोध में खड़ा न कर सका, वहां उसने प्रारम्भ से ही अपने धार्मिक संगठन को समयानुकूल परिवर्तित करके आत्मरक्षा के लिए खड़ा कर दिया था।

मुसलमानों के सुदीर्घ काल में भारत के धर्म में हमें जो उतार-चढ़ाव दिखाई देते हैं, वे दो प्रकार के हैं। एक और बाह्य आक्रमण को रोकने के लिए खाइयां खुद रही हैं, दूसरी ओर कई स्थानों पर एक विश्वव्यापी सिद्धान्त में इस्लाम और हिन्दू-धर्म को सम्मिलित करने के प्रयत्न हो रहे हैं। इन दोनों ही में हमें बाहर का असर दिखाई देता है। सती-प्रथा, पर्दा, खान-पान के बन्धन, जाति के कड़े विभाग, छूत-छात ये बाड़ें थीं जिनका उद्देश्य भारतीय धर्म की इस्लाम से रक्षा करना था। सदियों तक भारतीय धर्म इस्लाम के प्रभाव को रोकने के लिए चेष्टा करता रहा और इसमें कुछ भी सन्देह नहीं कि जैसी असफलता धार्मिक दृष्टि से इस्लाम को भारत में हुई, वैसी कहीं नहीं हुई।

- क्रमशः

स्वास्थ्य चर्चा

दमा : लक्षण, कारण, उपचार और बचाव के उपाय

आज दमा के रोगियों की संख्या में तेजी से वृद्धि हो रही है। पहले सिर्फ प्रौढ़ आयु के लोग ही इससे प्रभावित होते थे पर अब हर आयु वर्ग के लोग दमा से पीड़ित होते दिखाई दे रहे हैं।

भोजन का समुचित रूप से पाचन न होने पर वह पक्वाशय में दूषित रस उत्पन्न कर श्वसन प्रणाली में बाधा उत्पन्न करता है, जिससे श्वांस उखड़ने की स्थिति उत्पन्न होने लगती है। इसी को दमा कहा जाता है। लगातार बने रहने वाला जुकाम भी कई बार दमा का कारण बन जाता है। माता-पिता को दमा होने पर संतान को भी यह रोग होने की संभावना बढ़ जाती है। कई बार वातावरण का प्रभाव, प्रदूषण, किन्हीं चीजों से एलर्जी एवं अन्य कई रोग भी दमा का कारण बन जाते हैं। चिन्ता, दुःख, मानसिक तनाव तथा कई औषधियों के दुष्प्रभाव से भी दमा के लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं।

भोजन का समुचित रूप से पाचन न होने पर वह पक्वाशय में दूषित रस उत्पन्न कर श्वसन प्रणाली में बाधा उत्पन्न करता है, जिससे श्वांस उखड़ने की स्थिति उत्पन्न होने लगती है। इसी को दमा कहा जाता है। लगातार बने रहने वाला जुकाम भी कई बार दमा का कारण बन जाता है। माता-पिता को दमा होने पर संतान को भी यह रोग होने की संभावना बढ़ जाती है। कई बार वातावरण का प्रभाव, प्रदूषण, किन्हीं चीजों से एलर्जी एवं अन्य कई रोग भी दमा का कारण बन जाते हैं। चिन्ता, दुःख, मानसिक तनाव तथा कई औषधियों के दुष्प्रभाव से भी दमा के लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं।

दमा की पहचान

दौरे के समय सांस लेने में कष्ट होता है। छाती में भारीपन महसूस होता है। पेट फूल जाता है और सारे शरीर में बेचैनी एवं घबराहट के लक्षण पैदा हो जाते हैं। जुकाम हो जाता है। कफ बढ़ जाता है। दुर्बलता आ जाती है। सोते समय सांस लेने में कब्ज तथा बैठने पर सांस लेने में आराम-महसूस होता है। पेट की खराबी ही दमा का कारण है।

भोजन की चिकित्सा

दमा के रोगी को सबसे पहले अपने पेट और श्वास प्रणाली को साफ करने का उपाय करना चाहिए। इसके लिए उपवास सर्वोत्तम उपाय है एक दो दिन उपवास पर रहकर फिर क्रमशः रसाहार एवं फलाहार पर आ जाएं। इसके बाद सामान्य भोजन जिसमें चोकर सहित मोटे आटे की रोटी एवं लौकी की सब्जी लें। उपवास के दिनों में रोजाना गुनगुने पानी का एनिमा लें।

दमा के रोगी को ठंडे एवं गरिष्ठ भोजन से परहेज करते हुए रात का भोजन बहुत हल्का लेना चाहिए। प्रयास यह रहे कि रात्रि का भोजन सूर्यास्त से पहले ही ले लिया जाए। पीने के लिए गुनगुना पानी ठीक रहता है।

तम्बाकू, बीड़ी, सिगरेट, पान मसाला जैसे नशीले पदार्थ एवं शर्करा, मैदा से बनी व तली-भुनी चीजें तथा चाय, काफी आदि दमा के रोगी को छोड़ देना चाहिए।

छाती, गला तथा पसलियों को हवा लगने से बचायें। चिकने पदार्थ, चने की दाल से बनी चीजें और मिर्च मशाले के पदार्थ न खाएं। पेट में कब्ज न होने दें। कब्ज होते ही उसे तोड़ने की कोशिश करें।

भोजन व्यवस्था

सुबह सात बजे पेट साफ होने के बाद नीबू+शहद+गर्म पानी का सेवन करें। नौ बजे किशमिश, मुनक्का तथा अंजीर को रात में धोकर थोड़े पानी में भिगो लें। नाश्ते में अदरक, कालीमिर्च तथा इलाइची की चाय के साथ इन्हें लें। साढ़े ग्यारह बजे किसी सब्जी या फल का रस लें।

- शेष पृष्ठ 7 पर

स्वामी सर्वानन्द जी के 19वें स्मृति दिवस पर विशाल आर्य महा सम्मेलन सम्पन्न

महर्षि के अधूरे कार्यों को आगे बढ़ाना हमारा परम कर्त्तव्य – सुरेशचन्द्र आर्य

दयानन्द मठ अपनी जिम्म्मेदारियों को स्वामी जी महाराज के आदेशानुसार पूर्ण करता रहेगा – स्वामी सदानन्द

नारी को शिक्षा और सम्मान का अधिकार महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ही दिलाया – विनय आर्य

महर्षि दयानंद सरस्वती की 200वीं जयंती के आयोजनों के क्रम मे दयानन्द मठ, दीना नगर, गुरदासपुर पंजाब द्वारा स्वामी सर्वानंद जी की 19वीं पुण्यतिथि पर 1 से 9 नवंबर 2023 तक विभिन्न प्रेरणाप्रद आयोजन संपन्न हुए। मठ के अध्यक्ष स्वामी सदानंद जी महाराज की अध्यक्षता में आर्य महा सम्मेलनों के आयोजन में वृहद यज्ञ, प्रेरक भजन और वैदिक प्रवचनों से हजारों आर्यजन लाभान्वित हुए। 9 नवंबर 2023 को कार्यक्रम की पूर्णाहुति के अवसर पर मुख्य अतिथि श्री सुरेश चंद्र आर्य जी, प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, विशिष्ठ आतिथ श्री विनय आर्य जी, महामंत्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानंद मठ के अध्यक्ष, स्वामी सदानंद जी द्वारा ध्वजारोहण किया गया। विशाल आर्य महासम्मेलन में पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा एवं पंजाब की समस्त आर्य समाजों के अधिकारी, कार्यकर्ता, सदस्य, जम्मू आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एवं अधिकारी गण, हरियाणा, हिमाचल, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, ओडिशा से लेकर बिहार, मध्य प्रदेश, नेपाल और दयानंद मठ के स्नातक मंडल के सुयोग्य विद्वान इत्यादी हज़ारों की संख्या में गणमान्य लोग पहुँचे। भजन संगीत से कार्यक्रम का आरंभ हुआ, जिसमें सभी लोग मंत्रमुग्ध हो गए।

कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में श्री विनय आर्य जी ने पंजाब की भूमि से आर्य समाज के गहरे नाते का वर्णन करते हुए महर्षि दयानंद सरस्वती जी के पथ पर कार्य कर रहे दयानंद मठ दीना नगर के सेवा कार्यों का विस्तृत रूप से वर्णन किया और महर्षि दयानंद सरस्वती जी द्वारा नारी जाति पर किए गए उपकारों से सभी को अवगत कराया। मुख्य अतिथि श्री सुरेश चंद्र आर्य जी ने महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती को मनाना आर्यजनों का सौभाग्य बताया और अपने संदेश में कहा कि महर्षि के कार्यों को आगे बढ़ाना हमारा परम कर्तव्य है। कार्यक्रम के अध्यक्ष स्वामी सदानंद जी महाराज ने भी उपस्थित आर्यजनों को महर्षि के बताए रास्ते पर चलने का संदेश दिया। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. बलविंदर शास्त्री जी ने आए हुए सभी महानुभावों का धन्यवाद करते हुए शांति पाठ के साथ कार्यक्रम का समापन कराया। – *मन्त्री*

ध्वजारोहण करके आर्य महासम्मेलन का शुभारम्भ करते सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी एवं उद्‌बोधन देते स्वामी सदानन्द जी, साथ में हैं दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी, श्री अशोक पुरुथी जी एवं अन्य महानुभाव।

आर्यसमाज जनकपुरी बी ब्लाक, नई दिल्ली ने मनाया स्वर्णिम स्थापना दिवस

आर्यसमाज मन्दिरों के सुन्दर भवन और व्यवस्थाएं कार्यों को बढ़ाने में सहायक – सुरेन्द्र कुमार आर्य

दिल्ली की सैकड़ों आदर्श आर्य समाजों में बी 2 जनकपुरी आर्य समाज का अपना महत्वपूर्ण स्थान है। इस आर्य समाज की स्थापना के 50 वर्ष पूर्ण होने पर वहां के सभी अधिकारियों, कार्यकर्ताओं और सदस्यों में अपार उमंग, उत्साह और उल्लास दिखाई दिया। इस उत्साह का एक कारण यह भी था कि ये सुंदर अवसर तब आया है कि जब संपूर्ण आर्य जगत महर्षि दयानंद की 200वीं जयंती मना रहा है। इस भावना और कामना को प्रदर्शित करते हुए 2-5 नवंबर 2023 के बीच आर्य समाज द्वारा स्वर्णिम स्थापना दिवस के रूप में भव्य और प्रेरक आयोजन संपन्न हुआ। प्रतिदिन यज्ञ, भजन और प्रवचनों के विशेष आयोजन सफलतापूर्वक संपन्न हुए। चार दिवसीय इस विशेष आयोजन के समापन समारोह के अवसर पर जेबीएम ग्रुप के चेयरमैन एवं अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के प्रधान तथा महर्षि दयानंद सरस्वती की 200 वीं जयंती क दो वर्षीय आयोजनों की समिति के अध्यक्ष श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी की अध्यक्षता में भव्य कार्यक्रम में श्री धर्मपाल आर्य जी, प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आचार्य डॉ. वागीश जी, श्री जगदीश मुखी जी, पूर्व राज्यपाल एवं श्री यशपाल आर्य जी पूर्व निगम पार्षद, विनय आर्य जी, महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा इत्यादि अनेकानेक महानुभाव की उपस्थिति रहे। इस अवसर पर श्री धर्मपाल आर्य जी ने अपने उद्‌बोधन में महर्षि दयानंद सरस्वती जी के बताए हुए रास्ते पर आगे बढ़ने का संकल्प लेने की बात कही तो आचार्य वागीश जी ने मानव मात्र को कल्याण के पथ पर चलने का संदेश दिया। श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी ने आर्य समाज की उन्नति-प्रगति और सफलता के लिए मानव सेवा और राष्ट्र निर्माण के प्रति समर्पित होकर आगे बढ़ने का संदेश दिया। इस अवसर पर आर्य महिला सम्मेलन में श्रीमती मृदुला चौहान जी की अध्यक्षता में श्रीमती प्रतिभा आर्या जी ने श्रोताओं को प्रेरक उदबोधन दिया और बहुत ही प्रेमपूर्ण सौहार्द के वातावरण में सारा कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। आर्य समाज के प्रधान श्री कृष्ण बवेजा जी द्वारा संस्थापक सदस्यों को स्मरण किया गया और उनके प्रति प्रकाशित पुस्तक 'एक आभार' का विमोचन उपस्थित सभी महानुभावों द्वारा किया गया। – *मन्त्री*

सिलीगुड़ी (असम) में ज्ञान ज्योति पर्व महोत्सव सम्पन्न

यज्ञ, भजन, प्रवचन, नेत्र जांच और शोभायात्रा में उमडी आर्यजनों की भीड़

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती के दो वर्षीय आयोजनों की श्रंखला में सिलीगुड़ी में 4-5 नवंबर 2023 को वैदिक विचार मंच द्वारा ज्ञान ज्योति पर्व महोत्सव उत्साह पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्य जगत के संन्यासी स्वामी विदेह योगी जी, कुरुक्षेत्र, आचार्य डॉ. महावीर जी, हरिद्वार, आचार्य अखिलेश्वर जी और भजनोपदेशिका अमृता आर्या जी उपस्थित रहीं। प्रातः काल 7-10 बजे तक 108 यजमान दंपतियों द्वारा यज्ञ में आहुति दी गई , 10 से 2 बजे तक सिलीगुड़ी ग्रेटर लायंस क्लब नेत्रालय के सहयोग से 308 लोगों का निःशुल्क नेत्र परीक्षण किया गया। ढाई

– शेष पृष्ठ 8 पर

JioTV Jio TV+
आर्य समाज का एक मात्र टीवी चैनल
आर्य सन्देश टीवी
Arya Sandesh TV
अब जियो टीवी नेटवर्क पर भी
Jio Set Top Box और JIO मोबाइल App पर उपलब्ध

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती के आयोजनों की श्रृंखला में

भीमनाल (राजस्थान) में 200 कुण्डीय यज्ञ एवं सामाजिक समरसता सम्मेलन सम्पन्न

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती के आयोजनों की श्रृंखला में सनातन संस्कृति जागरण संघ, भीमनाल, राजस्थान द्वारा 26-30 अक्टूबर 2023 तक 200 कुंडीय यज्ञ एवं सामाजिक समरसता सम्मेलन सोल्लास संपन्न हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने देश की वर्तमान स्थितियों और प्राचीन इतिहास की तुलनात्मक विवेचना करते हुए मोहम्मद गज़नवी से लेकर मोपला आदि विभिन्न घटनाओं का उल्लेख कर देश और धर्म के पतन के कारण गिनाते हुए समाज को जातिवाद, ऊँचा-नीच से ऊपर उठने का संदेश दिया। आपने ऐतिहासिक घटनाओं को सामने रखते हुए हिन्दू समाज को राष्ट्र और धर्म के प्रति जागरूक रहने की बात कही।

इस अवसर पर 200 कुंडीय यज्ञ में सैकड़ों यजमानों ने आहुति देकर विश्व मंगल की कामना की। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य श्री ओमप्रकाश आर्य जी एवं आचार्य श्री जीववर्धन शास्त्री जी रहे। इस अवसर पर श्री जगदीश शर्मा जी, दैनिक भास्कर ग्रुप के संपादक, श्री प्रेम सिंह राव जी, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री किशन सिंह गहलोत, कोषाध्यक्ष श्री जय सिंह गहलोत ने भी यज्ञ में आहुतियां दी। श्री जीववर्धन शास्त्री जी ने आदिवासी क्षेत्रों में इसाइयों द्वारा फैलाए जा रहे मतांतरण के जाल से सबको जागृत किया और वहां पर आर्य समाज द्वारा किए जा रहे सेवा कार्यों से अवगत कराया। भजनोपदेशक श्री केशव देव जी, श्री भूपेंद्र जी, श्री ओम प्रकाश जी आदि ने प्रेरक भजनों की प्रस्तुति दी। वैदिक स्वस्ति पंथ न्यास के प्रमुख वैदिक वैज्ञानिक आचार्य श्री अग्निव्रत नैष्ठिक जी ने वेदों का महत्व और उनकी जन जन तक पहुँच कैसे हो? विषय पर सारगर्भित व्याख्यान दिया।

गुरुकुल महाविद्यालय आबू पर्वत के ब्रह्मचारियों द्वारा किए गए व्यायाम प्रदर्शन को देखकर सब भावविभोर हो गए। महर्षि दयानंद और आर्य समाज की मान्यता के अनुसार बिना किसी भेदभाव के सामूहिक रूप से भोजन की व्यवस्था की गई, जहाँ पर सभी लोगों ने एक साथ मिलकर भोजन किया और जातिवाद के षडयंत्र में न आने का संकल्प लिया।

-मन्त्री

प्रथम पृष्ठ का शेष

140वें निर्वाण दिवस पर 200 की आकृति में हुए सामूहिक यज्ञ से जगमगाया रामलीला मैदान

निर्वाण दिवस के अवसर पर ध्वजारोहण करते श्रीमती एवं श्री विद्यामित्र ठुकराल जी। उद्बोधन देते डॉ. स्वामी देवव्रत जी, श्री दीपक केड़िया जी, श्री धर्मपाल आर्य जी, श्री सतीश चड्डा जी। इस अवसर पर श्री सतीश आर्य जी द्वारा अंग्रेजी में अनुवादित यजुर्वेद भाष्य का लोकापर्ण करते स्वामी देवव्रत जी, आचार्य ओम प्रकाश जी, श्री विद्यामित्र ठुकराल जी एवं श्री सत्यानन्द आर्य जी। डॉ. आचार्य जयेन्द्र शास्त्री, श्री यशपाल कपूर जी (मरखम, कनाड़ा), श्री आशीष आर्य एवं माता कृष्णा ठुकराल जी को सम्मानित एवं पुरस्कृत करते सर्वश्री मनीष भाटिया, अरुण प्रकाश वर्मा, डॉ. मुकेश आर्य, आचार्य ओम प्रकाश, अजय सहगल, सुरेन्द्र रैली, सत्यानन्द आर्य एवं श्री कीर्ति शर्मा।- शेष जारी पृष्ठ 6 पर

अखिल भा. दयानन्द सेवाश्रम संघ की संस्थाओं ने मनाया प्रधान

श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य का जन्म दिवस

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती के आयोजन जहां संपूर्ण विश्व और भारत के कोने-कोने में लगातार चल रहे हैं वहां इन समस्त भव्य और विशाल आयोजनों की समिति के अध्यक्ष, जेबीएम के चेयरमैन एवं अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के प्रधान श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी का जन्मदिन 19 नवम्बर 2023 को विभिन्न शिक्षण संस्थाओं द्वारा मनाया गया। इस अवसर पर विद्यालयों के छात्र-छात्राओं ने मंगल कामना यज्ञ किए और आहुति देते हुए दीर्घायु और उत्तम स्वास्थ्य के लिए ईश्वर से प्रार्थना की। श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी और शीर्ष एक महान व्यक्तित्व के धनी ऐसे महापुरुष हैं जो कि एक सफल उद्योगपति होने के साथ ही महान परोपकारी तथा समाज सेवी हैं। महर्षि दयानंद सरस्वती के प्रति आपकी अनन्य निष्ठा प्रशंसनीय और अनुकरणीय है।

नॉर्थ इस्ट की संस्थाओं ने मनाया दयानन्द सेवाश्रम संघ पूर्वोत्तर के प्रधान

श्री दीन दयाल गुप्त जी का जन्म दिवस

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सेवा ईकाई अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ की पूर्वोत्तर शाखा दयानन्द सेवाश्रम संघ पूर्वोत्तर के प्रधान दीनदयाल गुप्त जी का जन्मदिन 20 नवम्बर 2023 को पूर्वोत्तर में संचालित विभिन्न शिक्षण संस्थाओं द्वारा मनाया गया। इस अवसर पर विद्यालयों के छात्र-छात्राओं ने मंगल कामना यज्ञ किए और आहुति देते हुए दीर्घायु और उत्तम स्वास्थ्य के लिए ईश्वर से प्रार्थना की। श्री दीन दयाल गुप्त जी एक उद्योगपति, आर्यनेता होने के साथ-साथ एक सुप्रसिद्ध समाजसेवी भी हैं। अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के प्रधान श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी एवं महामन्त्री श्री जोगेन्द्र खट्टर जी ने भी श्री गुप्त जी को शुभकामनाएं दी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य सन्देश परिवार की ओर से दोनों महानुभावों को जन्मदिवस की हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाई।

Initial & Middle Stage of Reform

Continue From Last Issue

Then he reached back to Ajmer. He had a debate with Priest Robinson and Priest Shoolbred on the topics of God, and living beings etc for 3 days. The Priests were speechless atlast. They were so much pleased with Swamiji's views and style of discussion that they gave him a written letter bearing the statement, 'We have never come across such a wise man of Sanskrit. Such persons are few in the world'.

Thus Swamiji used all the three options, whenever and wherever they were needed from the very beginning. In Future these options were developed more and more. Swamiji became expert in all the three; Speech, Writing and Debates.

Middle stage of Reform

kmbh was organised in Haridwar in the month of April, 1867. Saints from all over the country come together in the Fair. Some one wants to observe and feel clearly Goodness and badness. (shortcomings), beauty and ugliness of Hindus, he or she should visit this fair for 5-10 days. Hindus are great devotee. One can reverence to a observe that a great extent. On one side you will come across very old persons with stick moving from Railway station to Dharmshala. While moving they are bent forward. They have lost their teeth. On the other side there are mother carrying very small children moving in the sun. These mothers represent belief and hard work (Tapasya) for the Kumbh. Lakhs of people go there for getting blessings of sadhus and saints. They consider it a to have both in Punya (holy action) to have bath in pure and cold water of Ganga and inform about their faith in Hindutva. Such fairs represent orignal unity of Arya Community. If we try to obseave the big crowd seriously we can find Punjabi people with Punjabi turban, people of Lucknow wearing special caps covering their curly hair. There are people from Madras have long crest Similarly there are people from Gujrat with small height wearing turbans. In conclusion we can say that all the Hindus of Bharat are united. The person, who does not believe in what is described above, will be bound to have full faith.

All this is the enlightening part of the game, but there is some dark side also which is very deep. You will find easily people with habit of cheating, selfishness and laziness. You will find people with habit of consuming more and more and bad character also. You will also find people having no source of income, have got horses and elephants at their residence. Those who are called Tyagi, have lakhs of rupee in their accounts. All this can be seen without much efforts. Mathadhish wearing Bhagwa clothes take disadvantage of feelings of respect for them by their devotee men and women and remain busy in fulfilling their desires. Those who want to see bad condition of Hindu Dharma, They should visit Kumbh at Haridwar having their eyes open and alert. People present there show and represent original unity of Hindus on one hand and on the other hand they also show their unity in foolishness and superstitions.

Swami Dayanand reached Haridwr one month before the Kumbh fair. He placed some slabs on the sand of Ganga near Sapta Sarovar and fixed the Pakhand Khandini flag in the midde of those slabs. We can easily guess the different opposite feelings of the young reformer standing near sapta Sarovar.

To be Continue.....

पृष्ठ 5 का शेष

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का 140वां निर्वाण दिवस सम्पन्न

150वें स्थापना दिवस के दो वर्षीय आयोजनों की धूम मची है, इसी बीच उनका 140 हुआ निर्वाण दिवस आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली राज्य द्वारा दिल्ली की समस्त आर्य समाजों, शिक्षण संस्थाओं और गुरुकुलों की ओर से 11 नवंबर 2023 को रामलीला मैदान में एक भव्य समारोह के रूप में संपन्न हुआ, जिसमें दिल्ली की समस्त आर्य समाजों, वेद प्रचार मंडलों, शिक्षण संस्थानों के अधिकारी, कार्यकर्ता सदस्य और छात्र सम्मिलित रहे।

इस अवसर पर सर्वप्रथम आर्ष कन्या गुरुकुल नोएडा की ब्रह्मचारिणियों द्वारा सामूहिक मधुर भजनों के गायन से सम्पूर्ण वातावरण महर्षि दयानंद सरस्वती की महिमा और उनके उपकारों से गुंजायमान हो उठा। तदुपरांत श्रीमती कृष्णा ठुकराल जी एवं श्री विद्यामित्र ठुकराल जी ने ध्वजारोहण किया, जिसमें आर्य समाज के सभी शीर्ष अधिकारी, आर्य नेता उपस्थित रहे। दिल्ली प्रदेश के आर्य वीर और वीरांगनाओं के साथ मिलकर विशाल जनसमूह ने ध्वज गान गाया। श्री दीपक केडिया जी, डॉ. स्वामी देवव्रत जी, श्री धर्मपाल आर्य जी, श्री सुरेन्द्र रैली जी, श्री विनय आर्य जी, श्री जोगेन्द्र खट्टर जी, श्री सत्यानंद आर्य जी और अनेक अन्य महानुभाव ध्वजारोहण में सम्मिलित रहे। इसके उपरांत स्वामी देवव्रत जी ने महर्षि दयानंद सरस्वती जी के महान उपकारों और व्यक्तित्व को स्मरण करते हुए मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम, श्रीकृष्ण, भीष्म पितामह और अनेक अन्य महापुरुषों से तुलनात्मक विवेचना करते हुए महर्षि को संपूर्ण विश्व के महापुरुषों में अग्रणी बताया और उनसे प्रेरणा लेकर जीवन के हर क्षेत्र में आगे बढ़ने की बात कही। इस क्रम में श्री दीपक केडिया जी, धर्मपाल आर्य जी, सत्यानंद आर्य जी, श्री सुरेन्द्र रैली जी, श्री अजय सहगल जी, श्री विनय आर्य जी इत्यादि महानुभावों ने महर्षि के प्रति कृतज्ञता और आभार व्यक्त करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की। कार्यक्रम की अध्यक्षता दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष श्री विद्यामित्र ठुकराल जी ने की और आपने इस भव्य आयोजन के लिए सभी अधिकारियों को बधाई देते हुए महर्षि को भावपूर्ण श्रद्धांजलि दी।

महिला स्वरोजगार एवं आत्मनिर्भर बनाने के लिए 20 महिलाओं को दिए गए सहयोग के चैक

महर्षि दयानंद सरस्वती जी के निर्वाण दिवस पर स्वामी विद्यानंद सरस्वती वैदिक विद्वान पुरस्कार से वैदिक प्रवक्ता गुरुकुल नोएडा के आचार्य डॉ. जयेंद्र कुमार जी को सम्मानित किया गया तथा श्री राजीव आर्य कार्यकर्ता पुरस्कार आर्य वीर दन के वरिष्ठ शिक्षक, उपमन्त्री एवं प्रचारक श्री आशीष आर्य जी को प्रदान किया गया। चारों तरफ आज महर्षि के प्रति सभी के मन में अत्यंत श्रद्धा, निष्ठा और समर्पण के भाव प्रदर्शित हो रहे थे और जैसे ही सूर्य अस्ताचल की ओर जा रहा था, तभी वैदिक विद्वान श्री हरि प्रसाद जी के ब्रह्मत्व में 200 यज्ञकुंडों को इस तरह से सजाया गया था कि जिससे महर्षि की 200वीं जन्म शताब्दी के बीच इस 140वें निर्वाण दिवस की भव्यता के अनरूप 200 अंक की आकृति बन गई । इस अत्यंत महत्वपूर्ण यज्ञ में सभी यजमानों ने एक साथ दीप प्रज्ज्वलन कर अग्न्याधान किया और देखते ही देखते सारा वातावरण यज्ञमय हो गया। वेद मंत्रों की मंगल ध्वनि और यज्ञ की अग्नि और सुगंध से सम्पूर्ण क्षेत्र में एक नया उत्साह जाग गया और आज अगर संक्षेप में कहें तो दीपावली की अँधेरी सांझ में यज्ञ के प्रकाश से सम्पूर्ण क्षेत्र जगमगा उठा, इस सुंदर नज़ारे को देखकर सभी के मन भावविभोर हो उठे। महर्षि दयानंद सरस्वती जी के महान् व्यक्तित्व और कृतित्व को प्रदर्शित करने वाली नाटिका का दृश्य तथा सन्देश अपने आप में अद्भुत और अनुपम था। महर्षि दयानंद का लोकोपकारी जीवन उनकी दया और क्षमा की भावना इस तरह से दर्शयी गयी थी कि सभी लोग भावीभोर हो गये। महर्षि दयानंद ने विष देने वालों को कि अभय दान देकर पूरी मानव जाति पर उपकार किया। महर्षि के करूण भाव को हृदय से नमन करते हुए सभी उपस्थित लोगों ने भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की।

इस अवसर पर आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान श्री सुरेंद्र कुमार रैली, उपप्रधान श्रीमती उषा किरण आर्य, श्री कीर्ति शर्मा, श्री जोगेंद्र खट्टर,श्री अजय सहगल, श्री अरुण प्रकाश वर्मा तथा श्री जगदीश मलिक, श्रीमती रचना आहूजा, प्रधाना आर्य प्रांतीय महिला सभा ने मंच की शोभा व व्यवस्था बढ़ी, उनका धन्यवाद।

इस कार्यक्रम को सफल बनाने में श्रीमती सरोज यादव, सर्वश्री हरिओम बंसल, मनीष भाटिया, सुरिन्द्र चौधरी, डॉ मुकेश आर्य, गजेंद्र चैहान, आर्य संजीव कोहली, आर्य संजीव खेत्रपाल, श्रीमती सीमा भटिया,ह्नसुश्री उन्नति आर्य, आ. जयप्रकाश शास्त्री, श्री अजय तनेजा, श्री दिनेश शास्त्री, आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट,श्री अमित शर्मा के नेतृत्व में आर्य संदेश मीडिया केन्द्र के सहयोगियों तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय के सहयोगियों का विशेष धन्यवाद, जिन्होंने व्यवस्था बनाने में पूर्ण सहयोग दिया।

कार्यक्रम की व्यवस्थाएं बनाने में यज्ञ हेतु श्री दिनेश शास्त्री एवं आ. शिवा शास्त्री, दिल्ली प्रदेश के आर्य वीर दल के मंत्री श्री बृहस्पति आर्य, शिक्षकों, संवर्धकों तथा श्री नरेन्द्र गांधी जल व्यवस्था में सहयोग हेतु बहुत–बहुत धन्यवाद। यज्ञ में आर्य वीर दल की शाखाओं मंगोलपुरी, जहांगीरपुरी, मॉडल टाउन, संदेश विहार, गोबिन्द पुरी, मोती नगर, पंजाबी बाग, जयदेव पार्क, खजूरी खास, यमुना विहार, ब्रह्मपुरी, नजफगढ़, विकासपुरी, सागर पुर, सूरजमल विहार, प्रीत विहार तथा जनकपुरी, आर्य गुरुकुल रानी बाग, आर्य कन्या गुरुकुल सैनिक विहार और आर्य गुरुकुल तिहाड़ ग्राम के वीरों ने भी आर्यजनों के साथ यज्ञ में भाग लिया, धन्यवाद एवं शुभकामनाएं!

– आर्य सतीश चड्डा, महामन्त्री

पृष्ठ 2 का शेष

दिल्ली के दमघोटू......

अंटार्कटिक महाद्वीप, दक्षिण ध्रुव के हिंद प्रदेश के ऊपर 1985 में वैज्ञानिकों ने खोज की और पाया कि पृथिवी पर मनुष्यों द्वारा किए जाने वाले रासायनिक प्रयोगों से प्रदूषण इस कदर बढ़ गया है कि आकाश में स्थित ओजोन की वह परत जो पृथिवी पर रहने वाले प्राणियों की ऊपर से आने आने वाली पराबैंगनी (अल्ट्रावायलेट) किरणों को रोकती है, उसमें बहुत बड़ा छेद हो गया है। अगर इस तरह से प्रदूषण बढ़ता रहा और पराबैंगनी किरणें धरती पर आती रहीं तो बड़ी संख्या में लोग कैंसर, आंखों की बीमारी तथा भयंकर रोगों से ग्रसित हो जाएंगे। जिसके परिणाम स्वरूप स्थिति यहां तक पहुंच जाएगी कि वृक्ष तथा वनस्पतियां भी अपनी आरोग्यता को नहीं बचा पाएंगी और मनुष्यों को अपने साथ में प्राण वायु का सिलेंडर कमर पर बांध कर चलना होगा। आज भी आप देखते हैं कि जल प्रदूषण के कारण लोग हाथ में मिनरल वाटर की बोतल तथा नाक पर मास्क पहनकर चल रहे हैं। इस विकराल स्थिति में सबको सजग होना चाहिए।

1. हर वर्ष प्रत्येक व्यक्ति को एक पौधा अवश्य लगाना चाहिए, पौधा चाहे छायादार हो, फलदार हो अथवा घर में, गमलों में फूल वाला, औषधीय पौधा, तुलसी, एलोवेरा, गिलोय आदि का पौधा अवश्य उगाना चाहिए। एक वृक्ष एक मनुष्य की सम्पूर्ण आयु के लिए ऑक्सीजन प्रदान करता है तथा हवा, जल और ध्वनि के प्रदूषण के साथ-साथ धूल को भी रोकता है।

2. निजी वाहनों का आवश्यकतानुसार प्रयोग हितकर है। एक-एक घर में सबकी अलग-अलग गाड़ियों के चलन पर रोक होनी चाहिए। सिंगापुर जैसे देश में गाड़ी खरीदना वहां की सरकार ने कठिन कानून लगाकर पर्यावरण प्रदूषण को रोकने की पहल की है। इस तरह की पहल हमारे यहां भी लागू की जा सकती है।

3. अपनी कालोनी में, घर में कूड़े को जलाने से परहेज सबको करना चाहिए।

4. अपने घर में, आस-पास तथा कार्यालयों में साफ-सफाई रखने का प्रयास सबको करना चाहिए।

5. भारत सरकार द्वारा संचालित स्वच्छ भारत अभियान के नियमों को पूरी तरह पालन करना चाहिए।

6. पर्यावरण प्रदूषण से मुक्ति पाने के लिए प्रतिदिन अग्निहोत्र-यज्ञ करने की परंपरा का पालन करना चाहिए। कुछ लोगों का कहना है कि यज्ञ करने से भी तो धुंआ निकलता है, प्रदूषण फैलता है। यह बिलकुल गलत धारणा है, यज्ञ के पवित्र धुंए से जो थोड़ा-बहुत प्रदूषण होता है, उसे तो पेड़-पौधे जल्दी सोख लेते हैं और यज्ञ के सुगंधित धुएं से पेड़-पौधों में कार्बन-डाई-ऑक्साइड को खींचने की क्षमता शक्ति बढ़ती है।

-सम्पादक

140वें निर्वाण दिवस एवं दीपावली की पूर्व संध्या पर सभा एवं आर्यसमाज के पूर्णकालिक कार्यकर्ताओं के बीच दीपावली यज्ञ एवं पुरस्कार वितरण समारोह

हमारी वैदिक संस्कृति सदा से पर्व प्रिय रही है। पर्वों के अनुक्रम में शारदीय नवसस्येष्टि दीपावली के अवसर पर 11 नवंबर 2023 को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में कार्यकर्ताओं को शुभकामनाएं देकर पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य केंद्रीय सभा, दिल्ली राज्य, अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ, आर्य मीडिया सेंटर, सहयोग, दिल्ली सभा के सम्वर्धक आचार्यगणों एवं अन्य विभागों के सभी कार्यकर्ताओं को दीपावली की शुभकामनाएँ प्रदान की गई। इस अवसर पर सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी, कोषाध्यक्ष श्री विद्यामित्र ठुकराल जी, उपप्रधान श्री ओमप्रकाश आर्य जी, श्री अरुण प्रकाश वर्मा जी, श्री सतीश चड्ढा जी, श्री जोगेंद्र खट्टर जी, श्री सुखवीर आर्य जी, श्री सुरेन्द्र आर्य जी, श्री अशोक गुप्ता जी, श्री कृपाल सिंह आर्य जी, श्री सुरेश चंद्र गुप्ता जी, इत्यादि महानुभावों ने उपरोक्त सभी कार्यकर्ताओं को उपहार सहित दीपावली की शुभकामनाएं दी। सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी और सभी अधिकारियों ने आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती जी को नमन करते हुए आर्य समाज के सेवाकार्यों को महत्वपूर्ण बताते हुए समर्पित भाव से कर्मरत रहने का संदेश दिया। सर्वप्रथम आर्य समाज 15 हनुमान रोड की यज्ञशाला में विधिवत सबने मिलकर सामूहिक यज्ञ किया और उसके उपरांत सत्संग हाल में एक विशेष आयोजन माध्यम सभी विभागों के कार्यकर्ताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए।

पृष्ठ 3 का शेष

दमा : लक्षण, कारण, उपचार....

डेढ़ बजे फल, उसके साथ सब्जी का सूप या सलाद और उबली सब्जी का सेवन करें।

शाम के चार बजे फल का रस (संतरा, मौसमी, गाजर, सेब, अनार आदि) का सेवन करें।

छः बजे नीबू शहद गर्म पानी लें यदि उसके साथ जरूरी समझे तो भीगी हुई किशमिश, मुनक्का, अंजीर या दस खजूर लें।

साढ़े सात बजे सब्जी का सूप तथा कोई भी फल लें।

रात में साढ़े नौ बजे अदरक इलाइची वाली चाय लें तथा उपरोक्त आहार व्यवस्था पर रोगी एक दो माह तक रहने दें तो बहुत लाभ होगा।

दही का सेवन न करें आलू केवल सूप में सब्जियों के साथ डाल सकते हैं। अरबी, आलू, भिन्डी, गोभी, मैदे की चीजें न लें। सूप में कभी सब्जियों का सूप, जिसमें टमाटर भी डालें और कभी काले चने का सूप लें।

रात में सोते समय विशेष ध्यान रखें बन्द कमरे में न सोयें, मुंह और सिर ढककर न सोएं। शरीर पर कपड़ा रखें। पांव को गर्म रखें। दायीं या बायीं करवट अपनी सुविधा अनुसान सोयें। बायीं करवट सोना अधिक अच्छा रहता है।

हल्दी को रेत में भुन-पीस कर चूर्ण बना लें प्रति दिन एक चम्मच चूर्ण गर्म पानी से खाएं।

गेहूं के हरे पौधे का रस दो चम्मच की मात्रा में नित्य पिएं।

चार चम्मच मेथी (दाना) एक गिलास पानी में उबालें फिर उसे छान कर पी जाएं।

हर सिंगार की छाल का चूर्ण पानी में डाल कर पीने से दमा शीघ्र नष्ट हो जाता है।

तुलसी और अदरक का रस दोनों तीन-तीन ग्राम की मात्रा शहद के साथ सेवन करें।

चार लौंग, चार कालीमिर्च तथा चार पत्ते तुलसी के सबको चटनी बनाकर प्रति दिन खाएं।

दो चम्मच प्याज का रस तथा दो चम्मच शहद मिलाकर प्रतिदिन पीएं।

खेद व्यक्त

खेद है कि प्रेस में तकनीकी खराबी होने के कारण आर्यसन्देश साप्ताहिक का गत अंक 48 वर्ष 46 दिनांक 13 से 19 नवम्बर, 2023 प्रकाशित नहीं हो सके। पाठकों को हुई असुविधा के लिए खेद है। *- सम्पादक*

शोक समाचार

श्री गंगा प्रसाद जी को पत्नीशोक

सिक्किम राज्य के पूर्व राज्यपाल, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व अन्तरंग सदस्य एवं बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान श्री गंगा प्रसाद जी की धर्मपत्नी श्रीमती कमला देवी जी का 9 नवम्बर, 2023 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 24 नवम्बर को उनके पटना आवास सम्पन्न हुई, जिसमें सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य जी सहित अनेकों आर्य पदाधिकारियों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

स्वामी श्रद्धानन्द जी का निधन

आर्यजगत के तपस्वी वरिष्ठ स्वामी श्रद्धानन्द जी का 19 नवम्बर 2023 को 104 वर्ष की आयु में श्वास अवरुद्ध होने से आर्यसमाज सासनी गेट अलीगढ़ में निधन हो गया, उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। वे काफी समय से कैंसर से जूझ रहे थे।

श्री मुकेश तिवारी जी को पितृशोक

सार्वदेशिक सभा की प्रकाशन ईकाई सार्वदेशिक प्रेस के पूर्व कर्मचारी श्री मुकेश तिवारी जी के पूज्य पिता डॉ. मोहनचन्द्र तिवारी जी का 9 नवम्बर, 2023 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार 10 नवम्बर को निगम बोध घाट पर पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परम एपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त बपरिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2021-22-2023

LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 22-23-24/11/2023 (बुध-वीर-शुक्रवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-23

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 22 नवम्बर, 2023

प्रतिष्ठा में,

पृष्ठ 4 का शेष

सिलीगुड़ी (असम) में ज्ञान ज्योति पर्व महोत्सव ....

बजे से साढ़े तीन बजे तक विभिन्न आर्य समाजों के अधिकारी कार्यकर्ताओं को मंच से सम्मानित किया गया। 4-30 बजे से आठ बजे तक भजन और प्रवचनों का बहुत ही प्रेरक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। जिसमें महर्षि दयानन्द सरस्वती जी और वेदों की जीवन में उपयोगिता पर विधिवत प्रकाश डाला गया।

5 नवम्बर को प्रात: 9 से 2 बजे तक सिलीगुड़ी शहर के मुख्य मार्गों से विशाल शोभा यात्रा का भव्य आयोजन किया गया। जिसमें जिसमें क्षेत्रीय सैकड़ों लोगों के साथ ही नेपाल, बिहार, सिक्किम, दार्जिलिंग कर्सियांग, मालदा चाय बागानों इत्यादि स्थानों से भी सैकड़ों आर्यजन सम्मिलित हुए। शोभायात्रा में महषि दयानंद और आर्यसमाज के जय जयकार, ओम का ध्वज ऊँचा रहे, गगनभेदी नारों से सम्पूर्ण वातावरण गुंजायमान हो उठा। सायंकाल 4 बजे से साढ़े 8 बजे तक प्रवचन और भजनों के कार्यक्रम विधिवत प्रस्तुत किए गए, जिनमें हज़ारों की संख्या में आर्यजन उपस्थित रहे। कार्यक्रम के समापन के अवसर पर शहर के मुख्य चिकित्सकों, व्यवसाइयों और पुरुषार्थी महानुभावों का सार्वजनिक अभिनंदन किया गया। प्रेम और सौहार्द के वातावरण में कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

– *मन्त्री*

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह